एक थी वसुंधरा-4

“मेरे होंठ, नाक उसकी नाईटी, पैंटी के आवरणों सहित दोनों जांघों में ठीक उसकी योनि पर थे. मैंने लम्बी सांस ली. मेरे नथुनों में योनि से निकली जानी-पहचानी मादक महक भर गयी. ...”

Story By: Rajveer Midha (rajveermidha)
Posted: Monday, February 10th, 2020
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: एक थी वसुंधरा-4

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

एक थी वसुंधरा-4

 यह कहानी सुनें

“वसुंधरा ! यह यह … मैं ! कैसे … क्यों … ? ?” सेंटर-टेबल पर कॉफ़ी का करीब-करीब खाली कप रखते हुए मैं हकलाया.
“राज प्लीज़ ! मना मत करना.” वसुंधरा की आँखें नम थी.
“वो सब तो ठीक है वसु ! लेकिन यह सब … मतलब मैं … मैं कैसे … मेरा मतलब … मैं ही क्यों ? ?” मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि मैं क्या कहूं.

“राज ! इस कॉटेज में … इस बिस्तर में … यहां की दीवारों में, मेरी सालों की तन्हाई का बसेरा है और यहां के चप्पे-चप्पे में मेरी अकेलेपन में अपने खोये प्यार को याद कर के भरी असंख्य सिसकियाँ वाबस्ता हैं. इस चारदीवारी ने मुझे जाने कितनी रातें बेबसी के आलम में सिसकते हुए देखते गुज़ारी हैं और इसी चारदीवारी ने मुझ अभागिन पर नसीब को मेहरबान होते देखा है, आपको मुझ पर क़रम करते देखा है, मेरे प्यार को परवान चढ़ते देखा है. इसी कमरे में हमने अपनी सुहागरात मनाई है, यह बिस्तर मेरी सुहाग की शैय्या है … यह बिस्तर अपने देवता से मेरे मिलन का गवाह है. राज ! आप ही बोलो कि ये सब मैं किसी तीसरे के हवाले कैसे कर सकती हूँ ? इस पर मेरे बाद अगर किसी का हक़ है तो सिर्फ आपका.” वसुंधरा की तरल आँखें मेरा अंतर छलनी कर रही थी.

“वसुंधरा प्लीज़ ! आप समझिये मेरी बात को ! कल को आप को, आपके घर वाले ही इस बारे में सवाल पूछेंगे.” मेरा दृष्टिकोण पूरी तरह से दुनियादार था.
“मज़ाल नहीं हो सकती किसी की !” वसुंधरा का आत्मविश्वास से भरा हुआ कोड़े की फटकार जैसा स्वर उभरा.
“मान ली तेरी बात … मगर फिर भी वसु ! दोबारा सोच ले.”

“सोच समझ कर ही किया सब कुछ … राज ! सारी दुनिया ने मुझ पर सितम ही ढाये पर आप तो मेरे अपने हो … हो न राज ? ?” प्रेयसी वसुंधरा की आवाज़ वापिस मुलायम हो उठी और आँखों से मोती गिरने लगे.
“क्यों … कोई शक़ है ?” मैंने बात ख़त्म करने की ग़रज़ से लिफाफा बंद कर के टेबल पर रखा और आगे कुर्सी के उठ कर वसुंधरा के दाएं बाजू में जा कर बहुत नाज़ुकता से वसुंधरा के कपोलों से आंसू साफ़ किये.

वसुंधरा ने तत्काल अपने दोनों हाथों से मेरी कमर को कस लिया और हौले-हौले सुबकने लगी. अब स्थिति ये थी कि मैं वसुंधरा की कुर्सी के ज़रा सा दायें पहलू खड़ा था. वसुंधरा ने कुर्सी पर बैठे-बैठे अपने दोनों हाथ मेरी कमर के गिर्द लपेट रखे थे. और मुझसे सटे-सटे वसुंधरा हल्के-हल्के सिसक रही थी.

लेकिन वसुंधरा की सिसकारियाँ पल-प्रतिपल धीमी होती जा रही थी और क्षण-प्रतिक्षण कामदेव हालात पर और हम दोनों के मन पर अपना अधिपत्य लग़ातार बढ़ाते चले जा रहे थे. मेरा बायां हाथ वसुंधरा की पीठ और कन्धों पर गोलाकार रूप में और दायां हाथ वसुंधरा के सर पर लगातार गर्दिश कर रहा था.

वसुंधरा का नाक और होंठ मेरे पेट के साथ सटे हुए थे. वसुंधरा की नर्म-ग़र्म साँसें मेरी नाभि पर से आ-जा रहीं थीं जिसको महसूस करके मेरा काम-ध्वज बड़ी तेज़ी से चैतन्य अवस्था को प्राप्त होता जा रहा था और इस का अंदाज़ा वसुंधरा को भी बराबर हो रहा था. वसुंधरा के दोनों हाथों की उंगलियां मेरी पीठ के निचले भाग पर दाएं से बाएं, बाएं से दाएं गश्त लगा रही थी.

मैंने अपने दोनों हाथों से जोर लगा कर वसुंधरा को जोर से अपने साथ भींच लिया और कुछ देर तक भींचे रखा. वसुंधरा के होंठ मेरी नाभि पर और दोनों उरोज़ मेरी दोनों जांघों के साथ कस कर सटे हुए थे.

इससे नीचे तो हम दोनों के बीच में कुर्सी की लकड़ी की बाज़ु आ रही थी.

थोड़ी देर बाद वसुंधरा ने मेरी कमर पर से अपनी गिरफ्त ढीली कर के अपना मुंह हल्के से बायीं ओर घुमाया और एक लम्बी सांस ली. मैं तत्काल वसुंधरा के सामने की सीध में आया और अपने घुटनों पर हो गया. मैंने झुक कर आहिस्ता से वसुंधरा की गोदी में अपना सर रख दिया.

वसुंधरा के दोनों हाथ मेरे सर के बालों में गर्दिश करने लगे. मेरे दोनों हाथ घूम कर वसुंधरा के दोनों कूल्हों पर जमे थे और अपनी उँगलियों और हथेलियों के नीचे मैं स्पष्टत: वसुंधरा की पैंटी का इलास्टिक महसूस कर रहा था. और वसुंधरा के कूल्हों के दोनों तरफ से मेरे दोनों हाथों की सारी उंगलियां वसुंधरा की पैंटी के इलास्टिक के साथ-साथ वसुंधरा की पीठ पीछे तक का घेरा नापने लगी.

मेरे होंठ और मेरा नाक वसुंधरा की नाईटी, गाऊन और पैंटी के तमाम आवरणों सहित उसकी दोनों जांघों के मध्य ठीक वसुंधरा की योनि के ऊपर था. मैंने एक लम्बी सांस ली. मेरे नथुनों में वसुंधरा की योनि से निकलती वही जानी-पहचानी मादक सी मदन-महक भर गयी.
मेरे तो जैसे होश ही उड़ने लगे लेकिन पुरुष का अभिसार के आरंभिक क्षणों में ही अपने होशो-हवास खो देने का अंतिम परिणाम तो प्रणय-शैय्या पर अपनी ही प्राणप्रिया के साथ हो रहा काम-संग्राम हार जाना होता है. ऐसा होने देना तो सरासर मेरे पौरुष पर सवालिया निशान लगाने के बराबर था.

इसलिए पहले तो मैंने खुद को, अपने मन को, अपने बेतरतीब श्वासों को एकाग्रचित्त किया और फिर गहरे-गहरे सांस अपने फेफड़ों के ऊपरी सिरे तक भर कर अपने मुंह के रास्ते वसुंधरा की योनि के ठीक ऊपर जोर से छोड़ने लगा.

मेरे ऐसा करते ही सारी बाज़ी उलट गयी. मेरी ग़र्म-ग़र्म साँसें जैसे ही कपड़ों की चिलमन के पार वसुंधरा की योनि तक पहुंची … वसुंधरा पर तो कयामत बरपा हो गयी. अतितीव्र कामानुभूति के कारण वसुंधरा की पेशानी पर पसीना छलछला आया, वसुंधरा का सारा चेहरा सुर्ख हो उठा, आँखें में फिर से मद छा गया जिस के कारण वसुंधरा की आँखें गुलाबी हो उठी और रह रह कर मुंदने लगीं.
काम विहार की प्रत्याशा में वसुंधरा का निचला होंठ थरथराने लगा और वसुंधरा के मुंह से मंद-मंद काम-किलकारियां निकलने लगी ‘उफ़्फ़ … फ़..फ़ … !! आह … !! सस्स … सीईईईईई … ! आह..ह..ह … ह ! … राज !!’

अब ठीक था. अब इस काम-केलि की लगाम मेरे हाथ में थी. देखने वाली बात यह थी कि अभी तक मैंने वसुंधरा के किसी भी गोपनीय नारी-अंग को न तो आवरण-विहीन किया था और न ही स्पर्श किया था लेकिन तिस पर भी वसुंधरा का शरीर भयंकर काम-ज्वाला में तप रहा था. रति-प्रत्याशा में वसुंधरा की सांस धौंकनी की तरह चल रही थी.

अचानक ही वो अपनी दोनों छातियाँ मेरे सर पर रगड़ने लगी लेकिन मेरा इरादा तो अभी ढील का पेंच लड़ाने का था. मैं अभी थोड़ा और खेलने के मूड में था. अचानक ही कामविहिल वसुंधरा ने अपनी दोनों जांघों को थोड़ा और खोल दिया और वो कुर्सी पर अपने नितम्ब थोड़ा और आगे की ओर खिसका कर, नाईटी के ऊपर से ही, अपने दोनों हाथों से मेरा सर अपनी दोनों जांघों के ठीक बीच में जोर-जोर से दबाने लगी.

वसुंधरा काम-शिखर की ओर तेज़ी से बढ़ती चली जा रही थी और मेरा मंतव्य भी यही था कि वसुंधरा अपनी योनि में लिंग-प्रवेश से पहले एक बार ऐसे ही स्खलित हो जाए जिस से हमारी प्रणय-लीला क़दरतन लम्बी चले.
मैं खुद चूंकि पहले से ही वाशरूम में हस्तमैथुन कर आया था तो इस फ्रंट पर तो मैं पहले ही सेफ था.

मैंने अपने दोनों हाथ वसुंधरा के नाईट-गाऊन के अंदर की तरफ से डाल कर, नाईटी के ऊपर से ही वसुंधरा की कमर को जोर से अपने साथ कस लिया. मैंने नाईटी के आवरण सहित ही वसुंधरा की दायीं जांघ के अंदर वाली साइड को हल्के से अपने दांतों से चुमलाया.
” आह..ह ! नईं … नहीं … रा … ज़ ! प्लीज़ नहीं … न … न करो … नई … ईं … ईं … ईं … ईं … तुम्हें मेरी कसम … सी … ई … ई … ई … !”

मैंने अपने होशोहवास को एकाग्र रखते हुए वसुंधरा की जांघ पर कोई दो इंच और ऊपर, ज़रा सा अंदर की ओर अपने दांत जमाये और वसुंधरा की जांघ के मांस को नाईटी के कपड़े समेत अपने होंठों में लेकर प्यार से चुमलाया. तब वसुंधरा की योनि के लंबवत होंठ मेरे होंठों से ज्यादा से ज्यादा तीन-चार इंच ही परे रहे होंगे और मैं नाईटी और पैंटी के आवरण के अंदर छुपी वसुंधरा की योनि से उफ़नते हुए काम-रज़ की तीखी और नशीली महक से दो-चार हो रहा था.
” आह..ह..ह … ह !!! उफ़..फ़.. ! हा..हा..हाय.. ! बस..बस प्लीज़..हाय..ऐ.. ! मर गयी … स..स … सी..ई..ई … ई..ई … !! राज … !!”

वसुंधरा सिसियाते हुए उत्तेजना वश रह-रह कर मेरे सर पर चुम्बन पर चुम्बन लिए जा रही थी. वो अपने दोनों हाथों से मेरे सर के बालों में मुट्ठियाँ भर रही थी.
अचानक ही वसुंधरा का जिस्म कुर्सी पर एक सीध में पूरी तन गया और वसुंधरा की आँखे बंद हो गयी, सर कुर्सी के पीछे की ओर झूल गया, दोनों हाथ कुर्सी के दोनों हत्थों पर कस गए, दोनों नितम्ब कुर्सी से ऊपर उठ गए, टांगे और दोनों पैर बिल्कुल सीधे हो गए.

वसुंधरा प्रेम-शिखर … बस छूने को ही थी. मैंने झपट कर फ़ौरन वसुंधरा के जिस्म को खड़ा कर के अपने आगोश में ले लिया. नीमबेहोशी की हालत में भी वसुंधरा ने मेरे इर्दगिर्द अपनी बाहें कस ली और जोर से मेरे साथ लिपट गयी. वसुंधरा का जिस्म रह-रह कर

झटके खाने लगा और उस के मुंह से जिबह होते जानवर की सी आवाजें निकलने लगी.
” हूँ..ऊँ … !ऊँ..ऊँ..ऊँ..!!..गुर्रर्..गुर..र्गुर..र्गुर … !!..ह्क़्क़..ह्क़्क़ … ह्क़्क़.. हूँ..ऊँ … !!
हूँऊँ … ऊँ … ऊँ!! आह … ह … ह..ह!!”

मैं वसुंधरा का करीब-करीब बेहोश जिस्म अपने साथ कस कर लिपटाये वसुंधरा के जिस्म में रह-रह कर उठती काम-तरंग को महसूस करता रहा. कुछ ही देर में वसुंधरा के जिस्म में उठ रही काम-हिलोर कम होते-होते बिल्कुल बंद हो गयी. लेकिन वसुंधरा तो गहरी नींद में या यूं कहिये गहरे सम्मोहन में चली गयी प्रतीत हो रही थी.

मैंने बहुत आहिस्ता से वसुंधरा के जिस्म को गोद में संभाल कर उठाया और आराम से बिस्तर पर लिटा कर रजाई ओढ़ा दी. एकरूपतापूर्वक अपने शैय्या के साथी के साथ की प्रणय-क्रिया के अंतिम चरण में परम-संतुष्ट हो कर गहरी नींद में चले जाना बहुत ही स्वभाविक बात है.
इसका अनुभव तो मेरे बहुत सारे पाठकगणों ने भी किया होगा, जिन्होंने आराम से, बिना किसी डर के, बहुत प्यार से अपने साथी को कभी प्यार किया है.

हबड़ा-दबड़ी में योनि-भेदन कर के/ करवा के जल्दी-जल्दी स्खलित हो कर प्रणय-द्वंद्व की इतिश्री करने वाले नयी उम्र के युवक-युवतियां बहुधा इस स्वर्णिम अनुभव से वंचित रह जाते हैं.

एक और बात! कभी गौर कीजियेगा पाठकगण! पुरुष आँखें खोल कर अभिसार करना पसंद करता है और स्त्री आँखें बंद कर के.
पुरुष अभिसार के मध्य, स्त्री के भावों से उत्तेजित होता है और स्त्री अपने अंदर से उमड़ते अहसासों से आनंदित होती है. सौम्य से सौम्य पुरुष भी अभिसार के दौरान अपनी प्रेयसी पर कुछ-कुछ आक्रान्ता मोड में होता है. ‘नहीं … नहीं’ कहती क़ामयानी को अभिसार के लिए मनाने के लिए उस से थोड़ी सी जबरदस्ती करने में उसे अपनी जीत का अहसास

होता है और जिस-जिस आसन या जिस-जिस मुद्रा को स्त्री ‘न’ कहती है, बारबार वही आसन या मुद्रा अपनाता है या उसी क्रीड़ा में लिप्त होना चाहता है जिस में स्त्री को कुछ कष्ट होता हो.

इस का कारण पुरुष के डी एन ए में है, शैय्या पर अपनी सहचरी के साथ अपनाये गये ऐसे आक्रामक क्रिया-कपालों से पुरुष को अपने पौरुष का अहसास होता है. स्त्री रिसीविंग-एन्ड पर होती है इस लिए ज्यादा सहनशील और केंद्रित होती है और बहुत चतुर स्त्रियाँ ठीक इसी वक़्त अपने प्रेमी/पति से अपनी हर जायज़/नाजायज़ मांगें मनवाती रहतीं हैं.

कहानी जारी रहेगी.

rajveermidha@yahoo.com

Other stories you may be interested in

एक थी वसुंधरा-3

बैडरूम से अटैच वाशरूम में जाकर मैंने सब से पहले तो अपना ब्लैडर खाली किया और गीज़र ऑन कर दिया. फिर इधर-उधर देखा. गीज़र में पानी नहाने लायक़ गर्म होने में दस-पंद्रह मिनट तो लगने थे. टाइम पास करने के […]
Full Story >>>

मेरी बहन और जीजू की अदला-बदली की फैंटेसी-9

अब तक की मेरी इस मस्त ग्रुप सेक्स कहानी में आपने पढ़ा था कि कल रात जीजा ने अपनी बहन आलिया की गांड मारी, तो आकाश ने मेरी बहन चित्रा की गांड बजाई. मैंने भी अपनी बहन की सहेली नताशा […]
Full Story >>>

गर्लफ्रेंड की सहेली को पटा कर चोदा

प्रणाम दोस्तो, आपने मेरी पिछली कहानी कुंवारी लड़की को सुनसान बिल्डिंग में चोदा पढ़ी होगी। मुझे बहुत मेल भी आये है। मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ और आगे बढ़ता हूँ। पिछले भाग में आपने पढ़ा कि कैसे मुझे कंचन […]
Full Story >>>

एक थी वसुंधरा-2

ड्राइंगरूम के आतिशदान में आग जल रही थी इसलिए कॉटेज़ अंदर से खूब गर्म एवम् आरामदायक था लेकिन बाहर बारिश का ज़ोर अब कुछ बढ़ गया था और चीड़ के पेड़ तेज़ हवा के साथ तेज़-तेज़ झूम रहे थे. अब […]
Full Story >>>

एक थी वसुंधरा-1

बहुत दिनों बाद मैं आप का अपना राजवीर एक बार फिर से हाज़िर हुआ हूँ, अपनी क़लम से निकली एक और दास्तान लेकर! लेकिन पहले अपनी बात! मेरी पिछली कहानी एक और अहिल्या की ऐसी चौतरफ़ा वाहवाही की तो मैंने […]
Full Story >>>